अपराजिता

शिवानी

कभी-कभी अचानक ही विधाता हमें ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व से मिला देता है, जिसे देख स्वयं अपने जीवन की रिक्तता बहुत छोटी लगने लगती है । हमें तब लगता है कि भले ही उस अंतर्यामी ने हमें जीवन में कभी अकस्मात् अकारण ही दंडित कर दिया हो किंतु हमारे किसी अंग को हमसे विच्छिन्न कर हमें उससे वंचित तो नहीं किया । फिर भी हममें से कौन ऐसा मानव है जो अपनी विपत्ति के कठिन क्षणों में विधाता को दोषी नहीं ठहराता । मैंने अभी पिछले ही महीने, एक ऐसी अभिशप्त काया देखी है, जिसे विधाता ने कठोरतम दंड दिया है, किंतु उसे वह नतमस्तक आनंदी मुद्रा में झेल रही है, विधाता को कोसकर नहीं ।

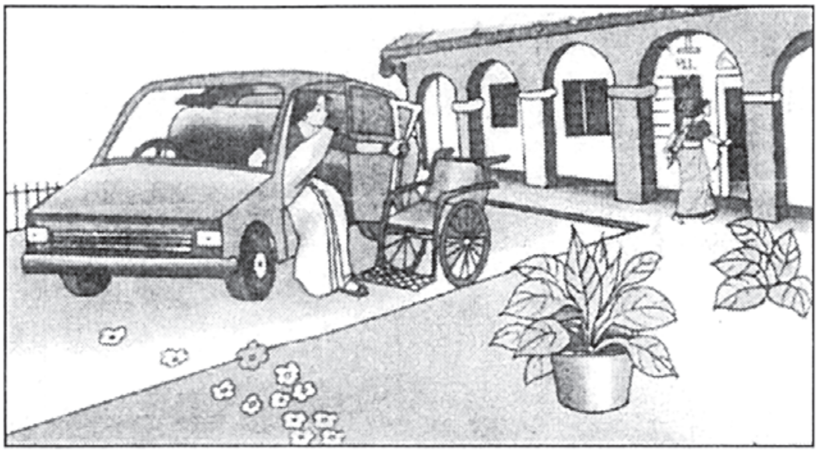

उसकी कोठी का अहाता एकदम हमारे बंगले के अहाते से जुड़ा था । अपनी शानदार कोठी में उसे पहली बार कार से उतरते देखा, तो आश्चर्य से देखती ही रह गई । कार का द्वार खुला, एक प्रौढ़ा ने उतरकर पिछली सीट से एक ह्वील चेयर निकाल कर सामने रख दी और भीतर चली गई । दूसरे ही क्षण, धीरे-धीरे बिना किसी सहारे के, कार से एक युवती ने अपने निर्जीव निचले धड़ को बड़ी दक्षता से नीचे उतारा, फिर बैसाखियों से ही ह्वील चेयर तक पहुँच उसमें बैठ गई और बड़ी तटस्थता से उसे स्वयं चलाती कोठी के भीतर चली गई । मैं फिर नित्य नियत समय पर उसका यह विचित्र आवागमन देखती और आश्चर्यचकित रह जाती - ठीक जैसे कोई मशीन बटन खटखटाती अपना काम किए चली जा रही हो ।

धीरे-धीरे मेरा उससे परिचय हुआ । कहानी सुनी तो दंग रह गई । नियति के प्रत्येक कठोर आघात को अति अमानवीय धैर्य एवं साहस से झेलती वह बित्ते-भर की लड़की मुझे किसी देवांगना से कम नहीं लगी । मैं चाहती हूँ कि मेरी पंक्तियों को उदास आँखों वाला वह गोरा, उजले वस्त्रों से सज्जित लखनऊ का मेधावी युवक भी पढ़े, जिसे मैंने कुछ माह पूर्व अपनी बहन के यहाँ देखा था । वह आई.ए.एस. की परीक्षा देने इलाहाबाद गया । लौटते समय किसी स्टेशन पर चाय लेने उतरा कि गाड़ी चल पड़ी । चलती ट्रेन में हाथ के कुल्हड़ सहित चढ़ने के प्रयास में गिरा और पहिये के नीचे हाथ पड़ गया । प्राण तो बच गए, पर दायाँ हाथ चला गया । उसी विच्छिन्न भुजा के साथ-साथ धीरे-धीरे वह मानसिक संतुलन भी खो बैठा । पहले दु:ख भुलाने के लिए नशे की

गोलियाँ खाने लगा और अब नूरमंजिल की शरण गही है । केवल एक हाथ खोकर ही उसने हथियार डाल दिए । इधर चंद्रा, जिसका निचला धड़ है निष्प्राण मांसपिंड़ मात्र, सदा उत्फुल्ल है, चेहरे पर विषाद की एक रेखा भी नहीं, बुद्धिदीप्त आँखों में अदम्य उत्साह, प्रतिपल-प्रतिक्षण भरपूर जीने की उत्कट जिजीविषा और फिर कैसी-कैसी महत्त्वाकांक्षाएँ ।

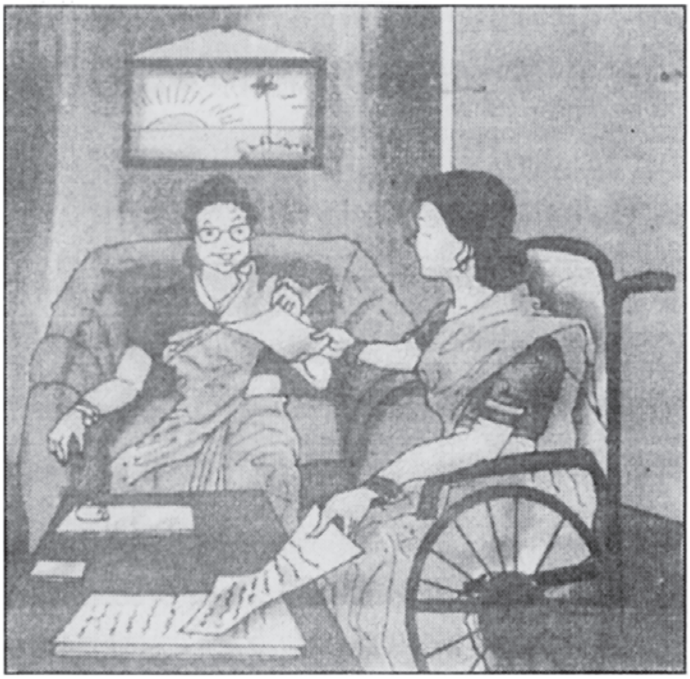

''मैडम, आप लखनऊ जाते ही क्या मुझे ड्रग रिसर्च इंस्टिट्यूट से पूछकर यह बताएँगी कि क्या वहाँ आने पर मेरे विषय माइक्रोबायोलाजी से संबधित कुछ सामग्री मिल सकेगी ?''

''मैडम आप कह रही थीं कि आपके दामाद हवाई के ईस्ट वेस्ट सेंटर में हैं । क्या आप उन्हें मेरा बायोडाटा भेजकर पूछ सकेंगी कि मुझे वहाँ की कोई फैलोशिप मिल सकती है ?''

यहाँ कभी सामान्य-सी हड्डी टूटने पर या पैर में मोच आ जाने पर ही प्राण ऐसे कंठगत हो जाते हैं जैसे विपत्ति का आकाश ही सिर पर टूट पड़ा है । और इधर यह लड़की है कि पूरा निचला धड़ सुन्न है, फिर भी बोटी-बोटी फड़क रही है । ऊँची नौकरी की एक ही नीरस करवट में उसकी प्रतिभा निरंतर डूबती जा रही है । आजकल वह आई.आई.टी. मद्रास में काम कर रही है ।

जन्म के अठारहवें महीने में ही जिसकी गरदन से नीचे का पूरा शरीर पोलियो ने निर्जीव कर दिया हो, उसने किस अद्‌भुत साहस से नियति को अँगूठा दिखा अपनी थीसिस पर डॉक्टरेट ली होगी ।

''मैडम, मैं चाहती हूँ कि कोई मुझे सामान्य-सा सहरा भी न दे । आप तो देखती है, मेरी माँ को मेरी कार चलानी पड़ती हैं । मैंने इसीसे एक ऐसी कार का नक्शा बनाकर दिया है, जिससे मैं अपने पैरों के निर्जीव अस्तित्व को भी सजीव बना दूँगी । यह देखिए, मैंने अपनी प्रयोगशाला में अपना संचालन कैसा सुगम बना लिया है । मैं अपना सारा काम अब स्वयं निबटा लेती हूँ ।''

उसने मुझे तस्वीरें दिखाई । समस्त सामग्री उसके हाथों की पहुँच तक ऐसे धरी थीं कि निचला धड़ ऊपर उठाए बिना ही वह मनचाही सामग्री मेज पर उतार सकती थी । किंतु उसकी आज की इस पटुता के पीछे है एक सुदीर्घ कठिन अभ्यास की यातनाप्रद भूमिका । स्वयं डा. चंद्रा के प्रोफेसर के शब्दों में, ''हमने आज तक दो व्यक्तियों द्वारा सम्मिलित रूप में नोबेल पुरस्कार पाने के ही विषय में सुना था, किंतु आज हम शायद पहली

बार इस पी-एच.डी. के विषय में भी कह सकते हैं । देखा जाए तो यह डॉक्टरेट भी संयुक्त रूप से मिलनी चाहिए डा. चंद्रा और उसकी अद्भुत साहसी जननी श्रीमती टी. सुब्रह्मण्यम् को । पच्चीस वर्ष तक इस सहिष्णु महिला ने पुत्री के साथ-साथ कैसी कठिन साधना की और इस साधना का सुखद अंत हुआ १९७६ में, जब चंद्रा को डॉक्टरेट मिली माइक्रोबायोलाजी में । अपंग स्त्री-पुरुषों में, इस विषय में डाक्टरेट पाने वाली डा. चंद्रा प्रथम भारतीय हैं ।

जब इसे सामान्य ज्वर के चौथे दिन पक्षाघात हुआ तो गरदन के नीचे इसका सर्वांग अचल हो गया । भयभीत होकर हमने इसे बड़े-से-बड़े डॉक्टर को दिखाया । सबने एक स्वर में कहा, ''आप व्यर्थ पैसा बरबाद मत कीजिए । आपकी पुत्री जीवनभर केवल गरदन ही हिला पाएगी । संसार की कोई भी शक्ति इसे रोगमुक्त नहीं कर सकती ।'' सहसा श्रीमती सुब्रह्मण्यम् का कंठ अवरुद्ध हो गया, फिर वे धीमे स्वर में मुझे बताने लगीं, ''मेरे गर्भ में तब इसका भाई आ गया था । इसके भयानक अभिशाप के बावजूद मैंने कभी विधाता से यह नहीं कहा कि प्रभो, इसे उठा लो, इसके इस जीवन से तो मौत भली है । मैं निरंतर इसके जीवन की भीख ही माँगती रही । केवल सिर हिलाकर यह इधर-उधर देख-भर सकती थी । न हाथों में गति थी, न पैरों में, फिर भी मैंने आशा नहीं छोड़ी । एक आर्थोपैडिक सर्जन की बड़ी ख्याति सुनी थी, वहीं ले गई ।''

एक वर्ष तक कष्टसाध्य उपचार चला और एक दिन स्वयं ही इसके जरूरी धड़ में गति आ गई, हाथ हिलने लगे, नन्हीं उँगलियाँ मुझे बुलाने लगीं । निर्जीव धड़ को मैंने सहारा देकर बैठना सिखा दिया । पाँच वर्ष की हुई, तो मैं ही इसका स्कूल बनी । मेधावी पुत्री की विलक्षण बुद्धि ने फिर मुझे चमत्कृत कर दिया, सरस्वती स्वयं ही जैसे आकर जिह्वाग्र पर बैठ गई थी । बेंगलूरु के प्रसिद्ध माउंट कारमेल में उसे प्रवेश दिलाने में मुझे कांवेंट द्वार पर लगभग धरना ही देना पड़ा ।

''नहीं मिसेज सुब्रह्मण्यम्'', मदर ने कहा, ''हमें आपसे पूरी सहानुभूति है, पर आप ही सोचिए आपकी पुत्री की ह्वील चेयर लेकर कौन पूरे क्लास रूम में घुमाता फिरेगा ?''

''आप चिन्ता न करें मदर, मैं हमेशा उसके साथ रहूँगी ।'' और फिर पूरी कक्षाओं में अपंग पुत्री की कुर्सी की परिक्रमा मैं स्वयं कराती । वे पीरियड़ दर पीरियड़ उसके पीछे खड़ी रहतीं । प्रत्येक परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर चंद्रा ने स्वर्ण पदक जीते । बी.एस-सी. किया, प्राणिशास्त्र में, एम.एस-सी. में प्रथम स्थान प्राप्त किया और बेंगलूरु के प्रख्यात इंस्टिट्यूट ऑफ सायंस में अपने लिए स्पेशल सीट अर्जित की । केवल अपनी निष्ठा, धैर्य एवं साहस से पाँच वर्ष तक प्रोफ़ेसर सेठना के निर्देशन में शोधकार्य किया । इसी बीच माता-पिता ने पेंसिलवानिया से ह्वील चेयर मँगवा दी जिसे डा. चंद्रा स्वयं चलाती हुई पूरी प्रयोगशाला में बड़ी सुगमता से घूम सकती

थी । लैदर जैकेट के कठिन जिरह-बख्तर में कसी उस हँसमुख लड़की को देख मुझे युद्ध-क्षेत्र में डटे राणा सांगा का ही स्मरण हो आता था । क्षत-विक्षत शरीर में घावों के असंख्य किन्तु आभामंडित भव्य मुद्रा ।

''मैडम, आप तो लिखती हैं, मेरी ये कविताएँ देखिए । कुछ दम है क्या इनमें ?''

मैंने जब वे कविताएँ देखीं, तो आँखें भर आईं । जो उदासी उसके चेहरे पर कभी नहीं आने पाई, वह अनजाने ही उसकी कविता में छलक आई थी । फिर उसने अपनी कढ़ाई-बुनाई के सुंदर नमूने दिखाए । लड़की के दोनों हाथ जैसे दोनों पैरों का भी काम करते हों, निरंतर मशीनी खटखट में चलते रहते हैं । जर्मन भाषा में माता-पुत्री दोनों ने मैक्समूलर भवन से विशेष योग्यता सहित परीक्षा उत्तीर्ण की । गर्ल गाइड में राष्ट्रपति का स्वर्ण कार्ड पाने वाली वह प्रथम अपंग बालिका थी । यही नहीं, भारतीय एवं पाश्चात्य संगीत दोनों में उसकी समान रुचि है । अपने अलबम को अपनी निर्जीव टाँगों पर रख वह मुझे अपने चित्र दिखाने लगी । पुरस्कार ग्रहण करती डा. चंद्रा, प्रधानमंत्री के साथ मुसकराती खड़ी डा. चंद्रा, राष्ट्रपति को सलामी देती बालिका चंद्रा और ह्वील चेयर में लैदर जैकेट में जकड़ी बैसाखियों का सहारा लेकर अपनी डाक्टरेट ग्रहण करती डा. चंद्रा ।

''मेरी बड़ी इच्छा थी, मैं डॉक्टर बनूँ । मैं अपंग डॉ. मेरी वर्गीज के सफल जीवन की कहानी पढ़ चुकी थी । परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने पर भी मुझे मेडिकल में प्रवेश नहीं मिला । कहा गया मेरा निचला धड़ निर्जीव है, मैं एक सफल शल्य-चिकित्सक नहीं बन पाऊँगी ।'' किन्तु डा. चंद्रा के प्रोफेसर के शब्दों में, ''मुझे यह कहने में रंचमात्र भी हिचकिचाहट नहीं होती कि डा. चंद्रा ने विज्ञान की प्रगति में महान् योगदान दिया है । चिकित्सा ने जो खोया है, वह विज्ञान ने पाया ।''

चंद्रा के अलबम के अंतिम पृष्ठ में है उसकी जननी का बड़ा-सा चित्र जिसमें वे जे.सी. बेंगलूरु द्वारा प्रदत्त एक विशिष्ट पुरस्कार ग्रहण कर रही हैं - 'वीर जननी' का पुरस्कार । बहुत बड़ी-बड़ी उदास आँखें, जिनमें स्वयं माँ की व्यथा भी है और पुत्री की भी, अपने सारे सुख त्यागकर नित्य छाया बनी पुत्री की पहिया-लगी कुर्सी के पीछे चक्र-सी घूमती जननी की व्यथा, नाक के दोनों ओर हीरे की दो जगमगाती लौंगें, अधरों पर विजय का उल्लास, जूड़े में पुष्पवेणी । मेरे कानों में उस अद्भुत साहसी जननी शारदा सुब्रह्मण्यम् के शब्द अभी भी जैसे गुँज रहे हैं, ''ईश्वर सब द्वार एक साथ बंद नहीं करता । यदि एक द्वार बन्द करता भी है, तो दूसरा द्वार खोल भी देता है ।''

विचारबोध :- *अपराजिता एक ऐसी दिव्यांग युवती की संघर्ष की कहानी है जो अपनी शारीरिक अक्षमता के बावजूद असीम धैर्य और प्रबंल साहस के साथ आगे बढ़कर जिन्दगी को सफल बनाती है । साहित्य जगत की प्रमुख कहानीकार शिवानी हमें यह संदेश देती हैं कि यदि व्यक्ति के मन में प्रबल इच्छाशक्ति हो तो विकलांगता दीवार बनकर बाधक नहीं हो सकती ।*

- शब्दार्थ -

विलक्षण - असाधारण, विशेष लक्षण या गुणों से युक्त । अंतर्यामी - मन की बात जानने वाला, ईश्वर । काया - शरीर । उत्कट - तीव्र । अवस्था - हालत । तटस्थता - किसी का पक्ष न लेना । आवागमन- आना-जाना । जिरह - बख्तर, कवच । विषाद - अत्यधिक दु:ख । देवांगना - अप्सरा । जिजीविषा - जीने की इच्छा । पक्षाघात - लकवा । पी-एच्.डी. - एक उपाधि ।

प्रश्न और अभ्यास

1. संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न -

(i) डॉ. चंद्रा को पहली बार देखकर लेखिका के मन में क्या-क्या भाव जाग्रत हुए ?

(ii) लखनऊ के युवक की मानसिकता डॉ. चंद्रा से कैसे भिन्न थी ? उसे चंद्रा से किस तरह की प्रेरणा लेनी चाहिए ?

(iii) अपंग चंद्रा को प्रतिष्ठित कराने में उसकी जननी का क्या योगदान रहा ?

(iv) डॉ. चंद्रा और दूसरे लोगों में आप क्या अन्तर देखते हैं ?

(v) लेखिका को राणा सांगा का स्मरण क्यों हुआ ?

(vi) श्रीमती सुब्रह्मण्यम् को 'वीर जननी' का पुरस्कार क्यों दिया गया ?

भाषा ज्ञान

2. अर्थ भेद बताइए -

(i) अवस्था-आयु

(ii) उत्साह-साहस

(iii) पीड़ा-दु:ख

(iv) स्नेह-सहानुभूति

(v) महाशय - महोदय

3. निम्नलिखित शब्दों के लिंग परिवर्तन कीजिए -

युवक, बहन, लड़की, श्रीमती, माता

4. विपरीत शब्द लिखिए -

नित्य, समय, मानवीय, भीतर, विषाद, सुगम, कठिन, पीछे, जीवन, आशा, निर्जीव

5. निम्नलिखित क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूप लिखिए -

देखना, बैठना, बोलना, उठना, जीतना, सुनना

6. क्रिया विशेषण शब्दों को रेखांकित कीजिए –

(i) मैं हमेशा उसके साथ रहूँगी ।

(ii) फिर उसने अपनी कढ़ाई-बुनाई के सुन्दर नमूने दिखाए ।

(iii) धीरे-धीरे उससे मेरा परिचय हुआ ।

(iv) मैं फिर नित्य नियत समय पर उसका यह विचित्र आगमन देखती ।

7. अगर आपके पास-पड़ोस में कोई विकलांग है तो उसकी सहायता कीजिए ।

●